नया
डी एन ए

लोहे के बन्धन

वे सन् 1900 ई. के प्रारम्भिक वर्ष थे और संसार इरीच वेस नाम के जादूगर से मन्त्र मुग्ध था, वे उसे हैरी हॉदिनी के नाम से जानते थे जो कि संसार के सबसे महान बच जाने वाले कलाकार के रूप में मशहूर था।

हालांकि उसकी तरकीबें दृष्टि भ्रम होती थीं फिर भी हॉदिनी में बुद्धिमत्ता, आकर्षक व्यक्तित्व और शारीरिक निपुणता थी जिसने उसे बारम्बार मृत्यु से बच निकलने की रहस्यमयी क्षमता दे रखी थी।

हज़ारों निगाहें उस दिन हॉदिनी की ओर टकटकी लगाए हुए थीं जब उसे एक स्टील के बक्से में हाथ–पैर बान्धकर डाल दिया गया..... और तब उसे न्यूयॉर्क शहर के बन्दरगाह की लहरों में फेंक दिया गया। "महान् हॉदिनी ऐसे बन्धनों से कैसे बच निकल सकता है" भीड़ आश्चर्य में थी। इस सुरक्षित बन्द डिब्बे को खोलने से पहले ही उसका दम घुट जाएगा !

विश्व के महान् बच निकलने वाले उस कलाकार ने इससे पहले भी मौत को धोखा दिया था लेकिन इस बार ऐसा होना असम्भव प्रतीत हो रहा था। क्या अन्ततः इस महान् जादूगर को मौत हरा देगी ? 59 सैकण्डों के बाद उस स्तब्ध भीड़ को उसका जवाब मिल गया जब हैरी हॉदिनी की छोटी सी आकृति न्यूयॉर्क हार्बर के गहरे ठन्डे पानी में एक छपाके के साथ डूब गई। हॉदिनी बच निकलने के सबसे महान्तम आश्चर्यों में से एक का प्रदर्शन करना चाहता था और स्वयं मृत्यु के बन्धनों को तोड़ना चाहता था। उसने एक योजना बनाई जिसके अन्तर्गत उसने अपनी मृत्यु के दस वर्षों के भीतर एक दस शब्दों के गुप्त कोड को अपनी पत्नी को कहने की योजना बनाई।

इस महान् मायावी के अन्तिम संस्कार के बाद उसके मानने वाले क़ब्र के पार से उसके बोलने का इन्तज़ार करते रहे। फिर भी हॉदिनी द्वारा पहले से तय किया गया यह दस शब्दों वाला कोड भी उसकी पत्नी तक नहीं पहुंचा, महान् हॉदिनी भी मौत के उन लौह–बन्धनों से बच निकलने में असमर्थ रहा।

एक महान बराबरी

एक मैदान में रंग बिरंगे ट्यूलिप्स फूलों की अन्तहीन कतारें हैं। एक नया जन्मा बछड़ा जीवन में पहली बार प्रातःकाल की बेला में घास पर फिर रहा है, नवविवाहित जोड़े हवाई द्वीप समूह के किनारों पर सूरज की रोशनी में अपने स्वप्नों और पूर्वानुमानों की ज़िन्दगी का प्रारम्भ कर रहे हैं। ज़िन्दगी ज़िन्दादिली और उम्मीदों से भरी हो सकती है परन्तु एक पीढ़ी के बाद यह वाष्प के समान ओझल हो जाती है और मौत के जबड़ों में जकड़ जाती है। इस ग्रह पृथ्वी पर हमारा समय बहुत छोटा है।

मृत्यु को "एक समान कर देने वाला" कहा गया है। मंहगे हरे मैदानों में लगे हुए पत्थर के टुकड़े कहानियां कह देते हैं। नोबल पुरस्कार विजेता, सौन्दर्य साम्राज्ञियां, करोड़पति या फिर बेघर बार; सब मर जाते हैं, एक दिन हमारी बारी होगी।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मृत्यु एक जीवित शरीर की समरूपता है। एक बार पूरी तरह सड़ जाने पर हमारे शरीरों के बचे रह गए कैमिकल्स की क़ीमत लगभग एक डॉलर या चालीस रुपये होती है। तथापि मानवीय दृष्टिकोण से मानवीय जीवन का समापन एक अज्ञात आयाम की ओर हमारी रहस्यमयी यात्रा का प्रारम्भ है। स्वप्नवादी किसी धुंधले 'वलहल्ला' की आशा करते हैं जहां हम सब साथ–साथ काल्पनिक आदर्श द्वीप 'यूटोपिया' में हमेशा के लिए रहेंगे। नास्तिकवादी सोचते हैं कि कुछ भी नहीं है, बस हमारे लिये इन्तज़ार करती हुई एक क़ब्र है, जब हम मर जाते हैं।

उद्देश्य और आशा की हमारी खोज में हम एक व्यक्तिगत सृष्टिकर्त्ता से मृत्यु पर उसका दृष्टिकोण हमें देने की अपेक्षा करेंगे, विशेषतः जबकि उसने हमें प्रारम्भ करने के लिए यह जीवन दिया है। अगर यीशु मसीह ही वह सृष्टिकर्त्ता है तो हम इस बात की अपेक्षा करेंगे कि वह हमें इस बात के विषय में विश्वसनीय उत्तर दे कि जब हम मर जाते हैं उसके बाद क्या होता है।

मृत्यु के आयाम

हमने देखा है कि यीशु मसीह ने अपने बारे में, सृष्टि और हमारे उद्देश्य के लिए भौंचक्का कर देने वाले दावे किए; लेकिन उसने मृत्यु के बारे में क्या कहा ? अन्ततः हमारी नियति क्या है ?

एक दिन धार्मिक सदूकियों ने यीशु के सामने पुनर्जीवित होने के विषय में एक प्रश्न पूछते हुए उसे फंसाने की कोशिश की, जिसमें वे विश्वास नहीं रखते थे। यीशु ने इस्राएल के मृत पुरखों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का हवाला देते हुए उनकी पुनर्जीवित होने सम्बन्धी नास्तिकता का जवाब दिया –

"दो बातों पर भूल में पड़ गए हो, तुम पवित्र शास्त्र के विषय में नहीं जानते और तुम यह भी नहीं जानते कि परमेश्वर कैसे कार्य करता है। व्याकरण स्पष्ट है : परमेश्वर कहता है कि मैं हूं..... था नहीं ..... इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर। जीवित परमेश्वर स्वयं को मरे हुओं का नहीं; परन्तु जीवतों का परमेश्वर परिभाषित करता है"। मत्ती 22:29–32, द मैसेज

सृष्टि के रचयिता की हैसियत से यीशु मसीह ने मृत्यु के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान और अधिकार के साथ बोला था। एक दृष्टान्त में उसने अपने शिष्यों को आयामयुक्त अलगाव के बारे में बताया, जिसका अस्तित्व मृत्यु के बाद विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच होता है (लूका 16:26)।

प्रतिज्ञा

शिष्य यीशु की मृत्यु और उसके फिर से जी उठने के सन्दर्भों के बारे में गड़बड़ाए हुए थे। यीशु और उसके शिष्य यरूशलेम के रास्ते पर फसह का पर्व मनाने के लिए जा रहे थे, जहां निष्कलंक मेमने का बलिदान पापों की क्षमा हेतु भेंट चढ़ाया जाना था, परमेश्वर के त्याग की एक तस्वीर, मसीह।

अपनी सेवकाई और शिक्षा के तीन साल के बाद यीशु, जिसने स्वयं को 'मनुष्य का पुत्र' कहा था, अपने शिष्यों को एकांत में ले गया और उन्हें बताया –

"देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएंगे। और उसको अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और मारें; और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा"। मत्ती 20:18,19, द मैसेज

यीशु के शिष्य उलझन में थे। भीड़ उसके साथ थी और यीशु शहर का चर्चित व्यक्ति था। पुराने नियम की आशा, शान्ति और महिमा की भविष्यवाणियां पूरी होने के बिल्कुल समीप प्रतीत होती थीं।

"यातना ?", "क्रूस पर चढ़ाया जाना ?" "जीवित हो उठना ?", "यीशु का मतलब क्या था ?" वे असमंजस में थे, घबराए हुए थे। क्रूस पर चढ़ाया गया मसीहा उनकी नज़रों में मसीहा नहीं था।

"एक ऐसी घटना जिसे कि बहुप्रचारित किया गया, क्या आप नहीं सोचते कि ऐसा होना तर्कपूर्ण है कि एक भी इतिहासकार, किसी एक प्रत्यक्षदर्शी, किसी एक विरोधी ने हमेशा के लिए इतिहास बन जाने वाली बात को लिखा होता कि उसने यीशु की देह को देखा ? इतिहास की ख़ामोशी खुद मानो बहरी हो जाती है जब यीशु के पुनरुत्थान के विरोध में कोई साक्षी की बात होती है"।

टॉम एन्डरसन
भूतपूर्व अध्यक्ष
केलिफोर्निया ट्रायल लॉयर्स एसोसिएशन

यीशु का यरूशलेम में एक गधे पर आना, उसके राजा होने की घोषणा करते हुए उसकी आराधना करने वालों की उस जगह भीड़ ने उसका स्वागत किया। उसके दुश्मनों ने उसे एक फासले से देखा और नाराज़ हुए। वे उसकी मौत चाहते थे, और इसके पीछे उनका तर्क यह था कि "नासरत के इस बढ़ई की आराधना मसीह के रूप में कैसे की जा सकती है, जबकि वह हमारी धार्मिक व्यवस्था का एक हिस्सा भी नहीं है ?"

यीशु के पीछे–पीछे चलने वाले भविष्य में होने वाली उन घटनाओं के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे और वे एक उत्सव को देख रहे थे..... मौत की सज़ा को नहीं। उनका संसार बस सिलाई के किनारों से फटकर तार–तार हो जाने पर था।

निःशब्द

यीशु पकड़ा गया और पीलातुस, यहूदिया के नए चुने हुए राज्यपाल के पास लाया गया। यीशु के ख़िलाफ़ आरोप था, राजद्रोह का। एक ताश के पत्ते की चाल सा चला हुआ आरोप, यीशु के उस कथन पर आधारित था कि मन्दिर को गिराकर तीन दिनों में उसे बना देना। वास्तव में यीशु ने वह कथन अपने बारे में दिया था जो कि उसके स्वयं के सशरीर जी उठने की भविष्यवाणी था न कि मन्दिर का बनाना।

प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि यीशु उन झूठे आरोपों के सामने अचल खड़ा रहा। क्षमा के आख़िरी बचाव की पेशकश में पीलातुस ने भारी भीड़ से पूछा कि क्या यीशु और अपराधी बरअब्बा नामक व्यक्ति में से एक को छोड़ दिया जाए। वही विचलित भीड़ जिसने कुछ दिनों पहले यीशु की प्रशंसा की थी अब बड़े ज़बरदस्त तरीके से उसने बरअब्बा को छोड़े जाने को चुन लिया। इस तरह पीलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने को भेज दिया और अपनी ज़िम्मेदारी से छुटकारा पाते हुए, हाथ धो लिया।

मृत्यु दण्ड

क्रूस पर कीलों से जड़े जाने से पहले, यीशु के कपड़े उतारकर उसे नग्न कर दिया गया, उसको बुरी तरह पीटा गया, उस पर थूका गया, ठट्ठों में उड़ाया गया, तीर की नोंक जैसे कांटेदार कोड़े से बेरहमी से तब तक मारा गया जब तक कि उसकी चमड़ी न उधड़ गई। यशायाह ने इसी हालत में मसीह का चित्रांकन किया था :

"मैंने मारने वालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचने वालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और उनके थूकने से मैं ने मुंह न छिपाया"। यशायाह 50:6, एन एल टी

यह मारना–पीटना घण्टों तक चला और यीशु को खून में इतना लथपथ कर दिया गया कि वह पहचानने योग्य न रहा। भविष्यवक्ता यशायाह मसीह के इस रूप के विषय में क़रीब 800 वर्ष पहले बोला था :

"..... बहुत से लोग उसे देखकर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहां तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था)"। यशायाह 52:14, एन एल टी

वह विशिष्ट व्यक्ति जो क्षमा के बारे में बोला था, जिसने बीमारों को चंगा किया, और तूफानों को शान्त कर दिया, अब अपने दुश्मनों और बलशाली रोमी दण्डाधिकारियों की दया पर निर्भर था।

मुंगरे–हथौड़े इस्तेमाल करते हुए उन्होंने यीशु के हाथों और पैरों में सख्ती से बार–बार, ज़ोर–ज़ोर से कीलें ठोंके। तब उन्होंने तेज़ी से लकड़ी के क्रूस को ज़मीन में, दूसरे दो क्रूसों के बीच रखते हुए गिराकर खड़ा कर दिया।

यीशु क्रूस पर लगभग छह घण्टे तक लटका रहा तब दोपहर में तीन बजे – यही वह समय था जब फसह का मेमना पापबलि के रूप में बलिदान किया जाता था। यीशु ने चिल्लाकर कहा – "पूरा हुआ" (अरामी भाषा में) और प्राण त्याग दिए। अचानक आकाश अन्धियारा हो गया और एक भूकम्प ने पृथ्वी को हिला दिया।

इससे पहले कि यीशु के क्रूसित शरीर को दफ़नाया जाए, पीलातुस इस बात को जांच लेना चाहता था कि यीशु की मृत्यु हो चुकी है अतः एक रोमन सिपाही ने यीशु की पसली में भाला मारा, लहू और पानी का मिश्रण बहा जो इस बात का स्पष्ट संकेत था कि यीशु मर चुका था। उसके बाद यीशु का शरीर क्रूस से उतारा गया और उसे अरिमतियाह के यूसुफ की क़ब्र में दफ़ना दिया गया। रोमी सिपाहियों ने उसकी क़ब्र पर मुहर लगा दी और चौबीसों घण्टे उसकी रखवाली की।

इधर यीशु के शिष्य सकते की स्थिति में थे। डॉ. जे.पी. मोरलैण्ड उनकी मनः स्थिति के विषय में लिखते हैं, "अब उन्हें इस बात में विश्वास नहीं रहा था कि यीशु परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था। उन्हें यह भी सिखाया गया था कि वह मसीह को मरने नहीं देगा, अतः वे निराश हो गए। यीशु का आन्दोलन बीच राह में ही समाप्त हो गया था"। ली स्ट्राबेल, द केस फॉर क्राइस्ट 246

कुछ घटना घटी

परन्तु यह समापन नहीं था। निश्चय ही यीशु का आन्दोलन समाप्त नहीं हुआ और वास्तव में मसीहियत का अस्तित्व आज विश्व के सबसे बड़े धर्म के रूप में है। अतः हमें यह जानना होगा कि यीशु के शरीर को क्रूस पर से उतारने और उसके क़ब्र में रखे जाने के बाद क्या घटित हुआ।

न्यूयॉर्क टाइम्स में लिखे अपने लेख में पीटर स्टेनफिल उन भौंचक्का कर देने वाली घटनाओं के बारे में लिखते हैं जो यीशु की मृत्यु के तीन दिन बात घटी – "यीशु को मृत्यु दण्ड दिए जाने के कुछ ही समय बाद उसके शिष्य निराश और डरपोक समूह से अचानक उत्तेजित और प्रेरित लोगों के समूह में बदल गए जिनका सन्देश जीवित यीशु और आने वाले राज्य के बारे में था। जिन्होंने अपने जीवनों के जोखिम पर प्रचार किया, और अन्ततः एक साम्राज्य को बदल डाला..... परन्तु वास्तव में हुआ क्या था ?" जीसस डाइड एण्ड दैन वॉट हैपन्ड 1988

यही वह प्रश्न है जिसका उत्तर हमें तथ्यों की जांच–पड़ताल में खोजना है। नया नियम में प्रभु के पुनरुत्थान के प्रति पांच व्याख्याएं दी जा सकती हैं।

1. यीशु की मृत्यु वास्तव में क्रूस पर नहीं हुई।
2. पुनरुत्थान एक रचा गया षड़यंत्र था।
3. यह प्रेरितों का वहम या भ्रम था।
4. यह लेखा–जोखा एक किंवदन्ती है।
5. ऐसा वास्तव में घटित हुआ।

आइए, हम इन विकल्पों पर कार्य करें और तथ्यों के आधार पर देखें कि इसमें से क्या बात सही है।

क्या वास्तव में यीशु की मृत्यु हुई थी ?

चार्ल्स डिकेन्स जो कि एक विख्यात लेखक हुए हैं वह अपनी रचना "अ क्रिसमस कैरल" में यह नहीं चाहता कि कोई भी व्यक्ति इस परालौकिक चरित्र के बारे में ग़लतफ़हमी रखे कि अब क्या घटित होने वाला है। ठीक इसी प्रकार से जबकि हम एक प्रमुख जासूसी संस्था सी.एस.आई. की भूमिका को लेते हैं और पुनरुत्थान के विषय में प्रमाणों की कड़ियों को जोड़ते हैं हमें सर्वप्रथम इस बात को स्थापित करना होगा कि वास्तव में कि वहां पर एक मृत शरीर था। आख़िरकार, समाचार पत्र कभी इस बात की ख़बर प्रकाशित करेंगे कि मुर्दाघर में एक लाश पाई गई। जिसमें कुछ हलचल हुई और जो फिर से जीवित हो गई। हो सकता है कि यीशु के साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ हो।

कुछ लोगों ने इस बात को प्रस्तावित किया है कि यीशु मसीह क्रूस पर चढ़ाए जाने की सज़ा के दौरान जीवित हो और क़ब्र की सीलन भरी ठण्डी हवा से उसमें फिर जान आ गई। परन्तु यह सिद्धान्त चिकित्सीय प्रमाणों से मेल नहीं खाता। अमेरिकन मेडिकल ऐसोसिएशन के जनरल में प्रकाशित एक लेख इस बात की व्याख्या करता है कि क्यों यह "बेहोशी वाला सिद्धान्त" अस्वीकार है "स्पष्ट रूप से ऐतिहासिक और चिकित्सीय प्रमाण की वज़नदारी इस ओर इशारा करती है कि यीशु मर चुका था, उसकी पसली में भाले के घोंपे जाने ने न केवल उसके फेफड़े को छेदा होगा कि बल्कि हृदय को ढंकने वाली झिल्लीदार थैली और हृदय को भी छेद दिया होगा और इस प्रकार उसकी मृत्यु की निश्चितता हुई" | मैक्डॉवेल, न्यू एविडेन्स 224

लेकिन यह नास्तिकवादी नतीजा शायद ठीक हो क्योंकि अब इस केस को बन्द हुए 2000 वर्ष हो चुके हैं। अन्ततः हमें एक और दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

एक और स्थान हमें उन ग़ैर मसीही इतिहासकारों के लेखों से मिलता है जो उस समय के दौरान हुए, जब यीशु जीवित थे। इन इतिहासकारों में से तीन ने यीशु की मृत्यु का ज़िक्र किया।

लूसियान (120–180 ईस्वी) यीशु को एक क्रूसित दार्शनिक के रूप में सन्दर्भित करता है।

जोसेफस (37–100 ईस्वी) ने लिखा "इस समय यीशु अवतरित हुआ, एक बुद्धिमान व्यक्ति क्योंकि वह अद्भुत कार्यों का करने वाला था। जब पीलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने का दण्ड दिया, हमारे मध्य के प्रमुख लोगों ने उसे दोषी ठहराया, जो उसे प्रेम करते थे वे ऐसा नहीं कर सके"।

टैसीटस (56–120 ईस्वी) ने लिखा "ख्रिस्तुस, जिसे कि उसके प्रारम्भ से यह नाम मिला, उसने चरम दण्ड सहा..... हमारे प्रशासक पुन्तियुस पीलातुस के हाथों से"।

यह ऐसा ही है कि मानो पुराने दस्तावेज़ों को देखना और पाना कि पहली शताब्दी की एक सुबह द यरूशलेम पोस्ट नामक एक समाचार पत्र के पहले पृष्ठ पर यह समाचार छपे कि यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया और मर गया।

वास्तव में न तो मसीहियों और न रोमी और न ही यहूदियों के द्वारा दिए गए कोई ऐसे ऐतिहासिक लेख हैं जो यीशु की मृत्यु अथवा उसके गाड़े जाने के विषय में कोई विवाद प्रस्तुत करते हैं। यहां तक कि क्रोसान जो कि पुनरुत्थान में विश्वास न करने वाला एक नास्तिकवादी था इस बात पर सहमत होता है कि यीशु वास्तव में जिया और मृत्यु को प्राप्त हो गया "उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना, उतना ही निश्चित है जितना कि अन्य किसी ऐतिहासिक बात का होना"। द केस फॉर द रिजेरेक्शन ऑफ जीसस 49

ऐसे प्रमाणों की रोशनी में हम पाते हैं कि हमारे पांच विकल्पों में से पहले विकल्प को नकारने के लिए पर्याप्त प्रमाण हैं। यीशु वास्तव में मरा था "और इस बारे में कोई सन्देह नहीं है"।

ख़ाली क़ब्र का विषय

कोई भी गम्भीर इतिहासकार इस बारे में सन्देह नहीं करेगा कि जब यीशु को क्रूस पर से उतारा गया उसकी मृत्यु हो चुकी थी। तथापि बहुत से लोगों ने इस बारे में प्रश्न किया है कि यीशु की देह क़ब्र से कैसे गायब हो गई। इंग्लैण्ड के पत्रकार डॉ. फ्रेंक मॉरिसन प्रारम्भ में यह सोचते थे कि पुनरुत्थान या तो एक कल्पित कथा या एक मज़ाक है और उन्होंने इसके खण्डन के विषय में एक पुस्तक लिखने के लिए शोध प्रारम्भ किया। यह पुस्तक बहुत चर्चित हुई परन्तु अपने वास्तविक उद्देश्य को लेकर नहीं वरन् अन्य कारणों से। हम इस बारे में आगे देखेंगे।

मॉरिसन ने ख़ाली क़ब्र के मामले को सुलझाने का प्रयास करते हुए प्रारम्भ किया। क़ब्र अरिमतियाह के यूसुफ की थी, जो कि सन्हेड्रिन काउन्सिल (यहूदियों की प्राचीन सभा) का एक सदस्य था। उस समय इस्राएल में इस काउन्सिल का सदस्य होना मानो आज के समय में किसी फिल्म स्टार जितनी प्रसिद्धि पाना था। यूसुफ वास्तव में एक व्यक्ति था अन्यथा यहूदी अगुवों ने पुनरुत्थान को ग़लत ठहराने के अपने प्रयास में इस कहानी को एक जालसाज़ी के रूप में प्रचारित किया होता। इसी के साथ, यूसुफ की क़ब्र एक ऐसे स्थान पर रही होगी जिसे सब जानते होंगे और जिसे आसानी से पहचाना जा सकता होगा। अतः इस बात की विचारधारा को कि यीशु "क़ब्रिस्तान में खो गया, खारिज किए जाने की ज़रूरत है"। मॉरिसन ने इस बात पर आश्चर्य किया कि यीशु के शत्रुओं ने इस ख़ाली क़ब्र की कथा को फैलने नहीं दिया होता, अगर यह बात सत्य नहीं थी। यीशु की देह का मिल जाना इस पूरी घटना या कथा को तुरन्त समाप्त कर देता और ऐतिहासिक रूप से जो बात जानी जाती है वह यह कि यीशु के शत्रुओं ने यीशु के चेलों को दोषी ठहराया कि वे देह को चुरा ले गए। एक ऐसा दोषारोपण जो कि इस साझा विश्वास पर आधारित था कि क़ब्र खाली थी, दूसरे शब्दों में यीशु के शत्रुओं ने कहीं न कहीं यह स्वीकार किया कि क़ब्र में यीशु की देह नहीं थी।

वेस्टर्न मिशिगन यूनिवर्सिटी में प्राचीन इतिहास के प्रोफेसर डॉ. पॉल मायर ने भी यही कथन दोहराया। अगर सारे प्रमाण को सावधानी पूर्वक और सफाई से जांचा गया है तो यह निश्चित रूप से उचित है..... इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कि वह क़ब्र जिसमें यीशु को दफ़नाया गया था पहले ईस्टर की उस सुबह, वास्तव में ख़ाली थी और अभी तक इस बात का लेशमात्र प्रमाण भी नहीं पाया गया..... जो कि इस कथन को ग़लत ठहराए। द रेजेरेक्शन फैक्टर, जॉश मॅक्डॉवेल

यहूदी अगुवे स्तब्ध थे और उन्होंने शिष्यों पर यीशु की देह चुराने का दोष लगाया लेकिन रोमी शासन ने सैनिकों की एक प्रशिक्षित टुकड़ी को (जिसमें चार से बारह सैनिक होते थे) चौबीस घण्टे क़ब्र का पहरा देने के लिए नियुक्त किया था। मॉरिसन ने पूछा कि "कैसे इन प्रशिक्षित लोगों ने यीशु की देह को जानबूझकर नष्ट करने के लिए जाने दिया"। किसी व्यक्ति के लिए ऐसा कर पाना असम्भव था कि वह रोमी सिपाहियों की नज़र से बच जाए और दो टन वज़न के पत्थर को लुढ़का दे। तब भी पत्थर लुढ़का हुआ था और यीशु की देह गायब थी।

इंग्लैण्ड के बाइबिल विद्वान माइकल ग्रीन ने टिप्पणी की है "यीशु के प्रगट होने की घटना प्राचीन लेखों में किसी अन्य घटना जितनी ही प्रामाणिक है.... इस बारे में तार्किक रूप से कोई सन्देह नहीं हो सकता कि वह वास्तव में घटित हुई थी"।

अगर यीशु की देह को कहीं भी ढूंढ़ लिया गया होता तो उसके शत्रुओं ने पुनरुत्थान का पर्दाफाश एक जालसाज़ी के रूप में तुरन्त कर दिया होता। कैलीफोर्निया ट्रायल लॉयर्स ऐसोसिएशन के भूतपूर्व अध्यक्ष टॉम एन्डरसन इस तर्क की शक्ति को संक्षेपित करते हुए कहते हैं "एक ऐसी घटना जिसे कि बहुप्रचारित किया गया, क्या आप नहीं सोचते कि ऐसा होना तर्कपूर्ण है कि एक भी इतिहासकार, किसी एक प्रत्यक्षदर्शी, किसी एक विरोधी ने हमेशा के लिए इतिहास बन जाने वाली बात को लिखा होता कि उसने यीशु की देह को देखा ? इतिहास की ख़ामोशी खुद मानो बहरी हो जाती है जब यीशु के पुनरुत्थान के विरोध में कोई साक्षी की बात होती है" । मैक्डॉवेल, द रिज़ेरेक्शन फैक्टर

अतः देह के न होने का प्रमाण और एक ऐसी क़ब्र जो कि स्पष्ट रूप से ख़ाली थी, मॉरिसन ने स्वीकार किया कि प्रमाण बहुत ठोस हैं कि यीशु की देह किसी न किसी तरह से क़ब्र से गायब हो गई थी।

क़ब्र पर चोरी

जैसे मॉरिसन अपने जांच के निष्कर्ष पर पहुंचे उन्होंने यीशु के शिष्यों के उद्देश्य की जांच प्रारम्भ की। हो सकता है कि पुनरुत्थान का विचार वास्तव में एक चुराई गई देह पर आधारित था लेकिन अगर ऐसा है तो कैसे कोई व्यक्ति पुनरुत्थित यीशु के प्रगट होने की घटनाओं का समाचार लिखता ? हिस्ट्री ऑफ द ज्यूस में इतिहासकार पॉल जॉन्सन ने लिखा "जो बात मायने रखती है वह उसकी मृत्यु की परिस्थितियां नहीं, लेकिन इस बात का तथ्य है कि लोगों के लिए विस्तार पाते हुए समूह के द्वारा उसके जी उठने पर, वृहद स्तर पर और मानो एक ज़िद के समान विश्वास किया गया"।

क़ब्र निश्चित रूप से ख़ाली थी लेकिन देह की यह अनुपस्थिति मात्र नहीं थी जिसने यीशु के शिष्यों में मानो प्राण फूंक दिए हों (विशेषकर तब जबकि वे ही वे लोग थे जिन्होंने उसे चुराया था)। कुछ असामान्य घटना घटी, कि यीशु के शिष्य जो शोक मना रहे थे, जो छुपे हुए थे, अब वे निर्भयतापूर्वक इस बात की उद्घोषणा करने लगे कि उन्होंने यीशु को जीवित देखा है।

प्रत्येक प्रत्यक्षदर्शी लेखा इस बात की सूचना देता है कि सबसे पहले महिलाओं को और उसके बाद अपने शिष्यों को यीशु अचानक से सदेह दिखाई दिए। मॉरिसन ने इस बात पर आश्चर्य किया कि क्यों षड़यंत्रकारियों ने महिलाओं को इस घटनाक्रम का केन्द्र बनाया। पहली शताब्दी में एक प्रकार से महिलाओं को कोई अधिकार, पहिचान, स्तर प्राप्त नहीं था। अगर इस सारी घटना को सफलता देनी थी तो मॉरिसन तर्क देते हैं कि षड़यंत्रकारियों को यीशु को सबसे पहले जीवित देखने वालों में महिलाओं की जगह पुरुषों को रखना चाहिए था और जबकि हम सुनते हैं कि महिलाओं ने उसे छुआ, उससे बातचीत की और वे ही पहली थीं जिन्होंने ख़ाली क़ब्र को देखा।

इसके बाद प्रत्यक्षदर्शी लेखों के अनुसार सारे चेलों ने यीशु को दस से ज़्यादा अलग–अलग अवसरों पर देखा। उन्होंने लिखा कि उसने उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए और उसने उन्हें खुद को छूने को कहा और यह लिखा हुआ है कि उसने उनके साथ भोजन किया और उसके बाद वह एक अवसर पर पांच सौ से ज़्यादा शिष्यों को जीवित दिखाई दिया।

कानून के विद्वान जॉन वारविक मोन्टगोमेरी ने लिखा "56 ईस्वी में पौलुस प्रेरित ने लिखा कि पांच सौ से अधिक लोगों ने पुनरुत्थित यीशु को देखा और उनमें से अधिकतर लोग उस समय जीवित थे (1 कुरिन्थियों 15:6 के अनुसार)। यह विश्वसनीय तथ्य इस बात से बढ़कर है कि प्रारम्भिक मसीही एक ऐसी कहानी का निर्माण कर सके थे और उन्होंने उनके बीच में इसका प्रचार किया था जो बड़ी आसानी के साथ यीशु की देह को प्रस्तुत करने के द्वारा उनकी इस बात को नकार सकते थे"।

बाइबिल विद्वान गीस्लर और तुर्क इस बात पर सहमत हैं कि "अगर पुनरुत्थान वास्तव में नहीं हुआ तो फिर क्यों पौलुस प्रेरित ने ऐसे प्रत्यक्षदर्शियों की सूची दी ? इतना अधिक झूठ बोलने पर तो वह अपने कुरिन्थी पाठकों की विश्वसनीयता को तुरन्त खो देता" । नॉरमन एल. गीस्लर एवं फ्रेंक तुर्क, डोन्ट हैव एनफ फेथ टू बी एन एथेइस्ट

इंग्लैण्ड के बाइबिल विद्वान माइकल ग्रीन ने टिप्पणी की है "यीशु के प्रगट होने की घटना प्राचीन लेखों में किसी अन्य घटना जितनी ही प्रामाणिक है..... इस बारे में तार्किक रूप से कोई सन्देह नहीं हो सकता कि वह वास्तव में घटित हुई थी" | द एम्प्टी क्रॉस ऑफ जीसस, 22

अपने समापन पर स्थिर

अगर मॉरिसन के नास्तिकवाद को चुनौती देने के लिए प्रत्यक्षदर्शियों की सूचना पर्याप्त नहीं थी तो उसने शिष्यों के व्यवहार से भी रुकावट का सामना किया। इतिहास का एक तथ्य जिसने इतिहासकारों, मनोविज्ञानियों और नास्तिकवादियों को एक साथ उखाड़ फेंका है वह यह कि ये 11 कायर लोग अचानक से अपमान, सताव और मृत्यु को सहने के लिए तैयार हो गए। यीशु के केवल एक शिष्य की सामान्य मृत्यु को छोड़कर बाकी सब शहीदों के रूप में मारे गए। क्या वे एक झूठ के लिए इतना सब कुछ कर सकते थे, इस बात को जानते हुए कि उन्होंने ही देह को चुराया था। 11 सितम्बर के हमले में मारे गए तथाकथित मुस्लिम शहीदों ने इस बात को प्रमाणित किया है कि कुछ लोग एक ऐसे ग़लत कारण जिस पर वे विश्वास करते हैं, के लिए मरने को तैयार हो जाएंगे। तब भी एक स्वेच्छा से शहीद होने वाले के लिए एक जाने हुए झूठ पर जाना पागलपन है। पॉल लिटिल ने लिखा "लोग इस बात के लिए मरने को तैयार हो जाएंगे जिसे वे सत्य मानते हैं, हालांकि हो सकता है यह वास्तव में झूठ हो परन्तु वे एक ऐसी बात के लिए अपनी जान नहीं देंगे जिसे वे जानते हैं कि वह झूठ है" | नो व्हाय यू बिलीव 44

यीशु के शिष्यों ने इस बात पर सत्य विश्वास के साथ एक स्थिरता से भरे हुए ढंग से व्यवहार किया कि उनका अगुवा जीवित था।

किसी ने भी ठीक प्रकार से इस बात की व्याख्या नहीं की है कि क्यों शिष्य एक जाने हुए झूठ की ख़ातिर मरने को तैयार हो जाएंगे। लेकिन अगर फिर भी उन्होंने यीशु के पुनरुत्थान के विषय में झूठ बोलने का षड़यंत्र रचा था तो भी वे कैसे इस षड़यंत्र को दशकों तक बना कर रख सके कि उनमें से एक ने भी इस को पैसे या पद के लिए नहीं बेचा ? मोरलैण्ड ने लिखा "वे जो व्यक्तिगत फायदे के लिए झूठ बोलते हैं बहुत समय तक उस पर बने नहीं रहते, विशेषकर तब जब कठिनाइयां मिलने वाले लाभ को घटा दें" | जे.पी. मोरलैण्ड, स्केलिंग द सेक्युलर सिटी

चक कोल्सन जिन पर वॉटर गेट काण्ड में लिप्त होने का अभियोग लगाया गया था, ने एक लम्बे समय तक किसी झूठ को बनाए रखने के लिए बहुत से लोगों की कठिनाई की ओर इशारा किया।

"मैं जानता हूं कि पुनरुत्थान के सत्य तथ्य हैं और वॉटर गेट ने इस बात को मुझ पर प्रमाणित किया है। कैसे ? क्योंकि 12 लोग परखे गए कि उन्होंने मृतकों में से जीवित हुए यीशु को देखा था, उसके बाद उन्होंने इस सत्य को 40 वर्षों तक प्रचारा, उन में से एक ने भी कभी इसका इन्कार नहीं किया। हर एक को पीटा गया, सताया गया, पत्थरवाह किया गया और जेल में डाला गया। वे धीरज नहीं रख सकते थे अगर यह बात सत्य न होती। वाटर गेट ने संसार के सबसे शक्तिशाली 12 लोगों को उलझाया और वे एक झूठ को तीन सप्ताह तक बनाकर नहीं रख सके। आप मुझे बता रहे हैं कि 12 प्रेरित 40 वर्षों तक एक झूठ को बनाए रख सके ? यह बिल्कुल ही असम्भव है" | चार्ल्स कोल्सन, द पैराडॉक्स ऑफ पावर

कुछ ऐसा घटा जिसने इन पुरुषों और महिलाओं को पूरी रीति से बदल दिया। मॉरिसन ने स्वीकार किया "जो कोई इस समस्या तक पहुंचता है वह जल्दी या अन्त में इस तथ्य का सामना करता है जिसे समझाया नहीं जा सकता..... यह तथ्य यह है कि एक गहरी प्रतिबद्धता लोगों के छोटे से समूह में आ गई, एक बदलाव जो कि इस सत्य को सत्यापित करता है कि यीशु क़ब्र से जीवित हो गया"।

एक बुरी यात्रा

कई बार कुछ लोग उन चीज़ों को देख सकते हैं जिन्हें वे देखना चाहते हैं, ऐसी चीज़ें जो वास्तव में वहां हैं ही नहीं और यही वही बात है कि कुछ लोगों ने इस बात का दावा किया है कि चेले यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से इतने अधिक विचलित थे कि यीशु को जीवित देखने की उनकी इच्छा एक सामुदायिक वहम का कारण बन गई। क्या ऐसा सम्भव है ?

अमेरिकन ऐसोसिएशन ऑफ क्रिश्चियन काउन्सिलर्स के भूतपूर्व अध्यक्ष, मनोविज्ञानी गैरी कॉलिन्स से शिष्यों के इस सम्पूर्ण रूप से परिवर्तित व्यवहार के पीछे किसी वहम की सम्भावना के विषय में पूछा गया। कॉलिन्स ने टिप्पणी की कि "वहम या भ्रम की स्थिति व्यक्तिगत रूप से होती है, केवल कोई एक ही व्यक्ति किसी निश्चित वहम को एक बार देखता है। वे निश्चित रूप से ऐसी चीज़ नहीं हैं जिन्हें लोगों के एक समूह के द्वारा देखा जा सके"। वहम या भ्रम की स्थिति दूरवर्ती सम्भावना भी नहीं है। मनोविज्ञानी थॉमस जे थारबर्न के अनुसार "निश्चित रूप से यह बात स्वीकार करने योग्य नहीं है कि..... सामान्य बुद्धिमत्ता वाले पांच सौ लोग..... इन्द्रियों को प्रभावित करने वाले सब प्रकार के प्रभावों को अनुभव करेंगे..... दृश्य, श्रव्य और तथ्यात्मक..... सब कुछ एक साथ..... ये सारे अनुभव वहम पर सम्पूर्ण रूप से आधारित नहीं हो सकते"।